मधुबन ओम् शान्ति अंक 287 जून 2016

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(13-05-16)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, अपनी सूक्ष्म पवित्र किरणों की सकाश से प्रकृति सहित सर्व को पावन बनाने की सेवा में उपस्थित निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद, आज अहमदाबाद लोटस हाउस से स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - ड्रामा की हर सीन अति प्यारी और न्यारी है। जहाँ भी बाबा बिठाता है वहाँ सेवा है। बाबा ने कहा है बच्ची आपके कदम-कदम में पदम हैं, तो मैं यहाँ बैठे ऐसा ही अनुभव करती हूँ। मन्सा वृत्ति से भी सेवा है तो दृष्टि से भी सेवा है। यहाँ बैठे भी बापदादा और आप सबकी स्नेह भरी दुआओं का अनुभव करते बहुत आराम में हूँ। तबियत ठीक होती जा रही है, कुछ समय में शान्तिवन आ जाऊंगी।

संगम पर आपस में एक दो के दर्शन करना और प्रसन्न रहना, यह भी कितना बड़ा भाग्य है। मीठे बाबा ने जो बोलना सिखाया है उसके सिवाए और कुछ बोलना आता ही नहीं है। जैसे छोटा बच्चा होता है उसको बोलना सिखाते हैं, हमें भी बाबा ने सिखाया है बच्ची क्या बोलो, कैसे बोलो, क्या सुनो, कैसे सुनो! ऐसे नहीं एक कान से सुनो, दूसरे से निकाल दो। नहीं। बाबा के महावाक्य जो सुनते हैं, जी चाहता है जीवन में चले जायें। बाबा हमसे क्या चाहता है? अभी सारा मदार है हमारे सोचने पर। बाबा कहते बच्चे पहले सोचो यह बोलने लायक है! फिर बोलो। संगमयुग की महिमा बहुत है। यह थोड़ा ही टाइम है, 5 हजार साल में सौ साल कुछ भी नहीं, इसलिए सारे चक्र में यह समय बड़ा वैल्युबुल है। अपने भविष्य के लिए यहीं पर कमाई करनी है। अभी कमाई करने, सदा खुश रहने का समय है। जो भी हमारे से भूलें हुई हैं उसको पास्ट इज़ पास्ट करने की ताकत बाबा दे रहा है। जैसे बाबा हमें क्षमा करता है वैसे हम भी एक दो को क्षमा करते हैं! ऐसे नहीं कि यह तो हमेशा ऐसा ही करते हैं। अरे, सम्भलके बोलो। पुरुषार्थ में सच्चाई बड़ा साथ देती है। भले शरीर ने कई बार कुछ भी खेल दिखाया होगा, पर किसके बच्चे हैं, क्या कर रहे हैं... सदा इस स्मृति में रहे हैं। सच्चाई से भगवान और ईश्वर राज़ी है। सच्चाई की गहराई में जाते हैं तो पुरुषार्थ कामचलाऊ नहीं हो सकता। 40 साल जो विदेश सेवा का भाग्य मिला है, सब जगह जाके आई हूँ। अच्छा लगता है, कहाँ भी रहते हम सब एक हैं, एक के हैं, जो हुआ सो अच्छा, फिनिश। अभी जो होगा अच्छा ही होगा, गैरंटी है।

यह नुमाशाम का जो योग है, ये सारे विश्व में चलता है। मधुबन में जो सिस्टम बनती है उसे सब फालो करते हैं। मैं समझती हूँ सभी जगहों पर चलता होगा और यह जरुरी है सेन्टर पर संगठित रूप में बैठके योग करो। बाबा कहते थे जहाँ तुम बैठो लाइट ही लाइट हो, माइट ही माइट हो। अगर बाबा की लाइट और माइट है तो जो कुछ होता है वो एवरीथिंग इज़ राइट होगा। कोई भी गलती न हो क्योंकि हम सारे विश्व में सबसे श्रेष्ठ आत्मायें हैं, हमें संगमयुग पर डायरेक्ट भगवान की पालना, पढ़ाई और खजाना मिला है, तो कितने भाग्यवान तो क्या पदमापदम भाग्यशाली हैं।

देखो, कल हमारे जगदीश भाई का स्मृति दिन था। (12 मई 2001 को वह बाबा की गोद में गये) उनको सभी ने याद किया। वह बाबा का कितना अनन्य बच्चा था, उन्हें मैंने नजदीक से देखा है सचमुच एकदम आज्ञाकारी था। ऐसे बाबा के बच्चे, दीदी, दादी, मम्मा, भाऊ विश्वकिशोर, दादा विश्वरतन आज सब पूर्वज सामने आ रहे हैं। सभी अपना यादगार बनाकर गये हैं। अच्छा !

बहुत-बहुत दिल से स्नेह भरी याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"फ्लोलेस डायमण्ड (बेदाग हीरा) बनो"

1) बाप-दादा अपने हर एक बच्चे को फ्लोलेस (बेदाग) बनाना चाहते हैं। इसके लिए सिर्फ साकार रूप में जो करके दिखाया उसे फालो करो फिर कोई भी बात में फेल नहीं होंगे। कहाँ भी जब फेल होने की बात सामने आये तो यही याद रखना कि फालो फादर कर रहा हूँ? जब फालो फादर करेंगे तो जो भी कोई ऐसे कार्य होंगे तो वह करने में ब्रेक आ जायेगी, जज करेंगे यह कर्म हम कर सकते हैं! फालो फादर याद आने से फेल नहीं होंगे, फ्लोलेस बन जायेंगे।

2) जैसे आजकल तीन-तीन मास में परीक्षा होती है, उसमें जो फेल वा पास होते हैं, उन सबके नम्बर फाइनल में मिलाते हैं। जो बार-बार फेल होता है वह फाइनल में फेल हो जाता है इसलिए आप बच्चों की भी बीच-बीच में किसी न किसी रूप से परीक्षा होती रहती है, हर परीक्षा में पास होकर दिखाई है तब फाइनल पेपर में फ्लोलेस बन जायेंगे। जब फ्लोलेस बनों तब कहेंगे फुल पास। कोई भी फ्लो होगा तो फुल पास नहीं होंगे।

3) जैसे बाप सभी बातों में फुल है। ऐसे बच्चों को भी मास्टर नॉलेजफुल बनना है। सिर्फ नॉलेज में नहीं लेकिन सब बातों में मास्टर। मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिमान अर्थात् किसी भी प्रकार की फीलिंग से परे, सभी बातों में फुल। हर शब्द के पिछाड़ी में फुल आता है। तो जितना फुल बनते जायेंगे उतना फीलिंग का फ्लो वा फ्ल्यु खत्म हो जायेगा। फ्लोलेस को फुल कहा जाता है।

4) ब्राह्मण जीवन फ्लॉलेस (बेदाग) योग्य वा नामी-ग्रामी जीवन है। ब्राह्मण आत्माओं को सभी ऊंची नज़र से देखते हैं। बाप भी बच्चों की विशेषताओं को ही देखते हैं अगर कमी को देखें तो सदा के लिए उस कमी को अन्डरलाईन लग जाती है। बाप भाग्य-विधाता है इसलिए बाप सदा श्रेष्ठ नज़र से देखते हैं। श्रेष्ठता के आगे कमज़ोरी आपेही मन को खाती है। श्रेष्ठ बातें सुनने से कमज़ोरी स्पष्ट हो ही जाती है इसलिए बाप सदैव श्रेष्ठता का वर्णन करते हैं जिससे कमज़ोरी स्वत: ही दिखाई दे और उसे समाप्त कर सकें।

5) जब तेरा में मेरा मिक्स कर देते हो तो डायमण्ड में दाग आ जाता है। अभी हर एक को बेदाग डायमण्ड बनना है। संकल्प, बोल, संस्कार स्वभाव में कोई भी कमजोरी का वर्णन करना अर्थात् डायमण्ड में दाग लगाना। यदि कहते हो मेरा विचार ऐसा कहता है वा मेरा संस्कार ही ऐसा है, तो यही दाग है। जो बाप का संस्कार, संकल्प सो मेरा संस्कार संकल्प हो, तब कहेंगे समर्थ वा बेदाग डायमण्ड।

6) एक है फरियाद का रूप और दूसरा है याद का रूप, जब फरियाद के रूप में आ जाते हैं तो फर्स्ट स्टेज से सेकण्ड में आ जाते हैं इसलिए सदा बेदाग सच्चा हीरा, चमकता हुआ हीरा, अमूल्य हीरा बनो। इसके लिए परदर्शन और परचिंतन इन दो बातों से सदा दूर रहो तो हीरे पर धूल और दाग लग नहीं सकता।

7) बापदादा का बच्चों से विशेष स्नेह है इसलिए चाहते हैं कि हर बच्चा बाप समान सम्पन्न बन जाए। समय के पहले नम्बरवन हीरा बन जाए। अभी रिजल्ट आउट नहीं हुआ है। जो बनने चाहो, जितने नम्बर में आने चाहो, अभी आने की मार्जिन है इसलिए उड़ती कला का पुरूषार्थ करो। बेदाग नम्बरवन चमकता हुआ हीरा बन जाओ। बापदादा सच्चे बेदाग, अमूल्य हीरों का हार बनाने चाहते हैं।

8) बापदादा चाहते हैं कि एक-एक हीरा अमूल्य चकमता हुआ हो जो उसके लाइट माइट की चमक हद तक नहीं लेकिन बेहद तक जाए। बापदादा ने बच्चों के हद के संकल्प, हद के बोल, हद की सेवायें, हद के सम्बन्ध बहुत समय देखे, लेकिन अभी बेहद सेवा की आवश्यकता है। अब बेहद के तरफ दृष्टि रखो। जब बेहद की दृष्टि बने तब सृष्टि परिवर्तन हो। सृष्टि परिवर्तन का इतना बड़ा कार्य थोड़े समय में सम्पन्न करना है तो गति और विधि भी बेहद की फास्ट चाहिए।

9) आप होलीहंस सफेद वस्त्रधारी, साफ दिल अर्थात् स्वच्छता-स्वरुप हो। तन-मन और दिल से सदा बेदाग अर्थात् स्वच्छ बनो। कोई तन से अर्थात् बाहर से भले कितना भी स्वच्छ हो, साफ हो लेकिन मन से साफ न हो, स्वच्छ न हो तो कहते हैं कि पहले मन को साफ रखो। साफ मन वा साफ दिल पर साहेब राज़ी होता है। साथ-साथ साफ दिल वाले की सर्व मुराद अर्थात् कामनायें पूरी होती हैं।

10) सन्तुष्टमणि अर्थात् बेदाग मणि। सन्तुष्टता की निशानी है – सन्तुष्ट आत्मा सदा प्रसन्नचित्त स्वयं को भी अनुभव करेगी और उनसे दूसरे भी प्रसन्न होंगे। प्रसन्नचित्त स्थिति में प्रश्न चित्त नहीं होता। एक होता है प्रसन्नचित्त, दूसरा है प्रश्नचित्त। प्रसन्नचित्त ड्रामा के नॉलेजफुल होने के कारण प्रसन्न रहता, प्रश्न नहीं करता। जो भी प्रश्न अपने प्रति या किसके प्रति भी उठता है उसका उत्तर स्वयं को पहले आता है।

11) जैसे जवाहरी एक-एक रत्न को बेदाग वैल्युबल बनाता है। तो आप सबकी भी यही सेवा है। जो भी छोटे छोटे दाग हैं - उनको स्वच्छ बनाना, सम्पन्न बनाना, बाप समान बनाना, इसी

सेवा में मजा है। थक तो नहीं जाते हो! आप सबके अथक स्वरुप से औरों को भी प्रेरणा मिलेगी।

12) अब प्रतिज्ञा करो कि **वेस्ट को खत्म करेंगे, बेस्ट बनेंगे।** कितनी भी परीक्षा आये लेकिन परीक्षा परीक्षा है, प्रतिज्ञा प्रतिज्ञा है। परीक्षा आये, प्रतिज्ञा याद करो। जब सभी बेस्ट बन जायेंगे तब ही प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेंगे। आपके लिये रुका हुआ है। ऐसे ही पर्दा खुल जाये और आप तैयार हो रहे हो तो अच्छा लगेगा! इसीलिये पर्दा बन्द है।

13) जो बहुत कीमती, मूल्यवान, बेदाग़ डायमण्ड होता है उसे अगर लाइट के आगे रखो तो चमकेगा और जब चमकता है तो उससे किरणें निकलती हैं, उसमें भिन्न-भिन्न रंग दिखाई देते हैं। तो जब आप रीयल डायमण्ड बनेंगे, फरिश्ता बन जायेंगे तो आपके फरिश्ते स्वरूप से ये अष्ट शक्तियाँ दिखाई देंगी। जैसे वो रंग किरणों के रूप में दिखाई देते हैं, ऐसे आप डायमण्ड अर्थात् फरिश्ता रूप बनो तो चलते-फिरते आप द्वारा अष्ट शक्तियों के किरणों की अनुभूति होगी।

14) कई बच्चे समझते हैं कि हम तो सच्चे हैं लेकिन मुझे समझा नहीं जाता है। लेकिन सच्चा बेदाग हीरा कभी छिप नहीं सकता। अगर कोई समझते हैं मैं ऐसा हूँ, लेकिन मुझे ऐसा समझा नहीं जाता तो यह भी सच्चाई नहीं है। सच्चाई कभी छिप नहीं सकती और सच्चे सबके प्रिय बन जाते हैं। कई यह भी समझते हैं कि हम नज़दीक नहीं हैं इसलिए ही प्रख्यात नहीं हैं। लेकिन जो सच्चे और पक्के होते हैं वो दूर होते हुए भी अपनी परख छिपा नहीं सकते।

15) जैसे साकार रूप के लिए वर्णन करते हैं, कोई भी अन्जान समझ सकता था कि यह कोई अलौकिक व्यक्ति है। हजारों के बीच में वह हीरा चमकता था तो फालो फादर। अभी सर्विस के कारण कुछ संसारी लोगों में मिक्स लगते हो लेकिन सर्विस के प्रति सम्बन्ध में रहते भी न्यारे रहने का जो मंत्र है – उसको नहीं भूलना। लौकिक में रहते भी अब अलौकिकता का अनुभव कराओ।

16) अब अपनी ऐसी बेदाग स्थिति बनाओ जो लोगों की निगाह आप लोगों की तरफ स्वत: ही जाये। स्टेज सेक्रेटरी आपका परिचय न दे लेकिन आपकी स्टेज स्वयं ही परिचय दे। जैसे धूल में छिपा हुआ हीरा अपना परिचय खुद देता है। ऐसे यह संगमयुग की हीरे तुल्य जीवन अपना परिचय स्वयं ही दे सकती है। इसके लिए साधारण रूप में असाधारण स्थिति का अनुभव स्वयं भी करो और औरों को भी कराओ। बाहर्मुखता में आने समय अन्तर्मुखता की स्थिति को भी साथ-साथ रखो।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 18-6-13 *मधुबन*

"बाबा के साथ उड़ना है तो बुद्धि प्लेन रहे, हल्की रहे, कोई भी बात पकड़कर नहीं बैठो"

(दादी जानकी)

दिल कहता है ऐसे ही शान्ति में बैठे रहें, सबके मन में भावना है शान्तिधाम जाना है। तो पहले से ही भले यहाँ कार्य-व्यवहार में हैं, पर बुद्धि शान्तिधाम में है। बाबा मम्मा साकार में होते हुए भी उपराम रहते थे, सूक्ष्म ध्यान रखते थे कि हर कदम में पदमों की कमाई जमा हो। तो सभी को यह भावना और भासना आती है ना! हर आत्मा अपने को परमात्मा की सन्तान समझके सुखकर्ता दु:खहर्ता बाप के वरदानों से सदा सुखी रहे, यही तमन्ना है ना। सदा ही बुद्धि प्लेन रहे, हल्की रहे तो बाबा के साथ रहके उड़ना सहज है। खाली हाथ आये थे, खाली हाथ जाना है। जब कोई शरीर छोड़ता है तो खाली हाथ जाता है। बाबा कहते कोई बात को भी पकड़के नहीं बैठो, नहीं तो खतरा है। पकड़के बैठेंगे तो वो छोड़ेगी नहीं। इतनी तैयारी अब कर लेनी है, घर जाना है तो। डेथ की कभी डेट नहीं होती है पर डेथ आती जरुर है इसलिए कभी यह नहीं सोचो कि कब विनाश होगा?

रोज़ की मुरली से कोई न कोई बात की गहराई में जाओ तो लाइट और माइट का अनुभव होना शुरू हो जायेगा। लाइट हाउस सबको रास्ता बताने का काम करता है। सागर के किनारे बहुत लाइट हाउस होते हैं। बाबा हमको गाइड बनके ले जाने आया है, शुक्रिया बाबा आपने हमें घर का रास्ता बताया है और साथ ले जाने का वायदा किया है। जिसको यह भासना होगी वो कभी यह नहीं कहेगा, कैसे जाऊं? इतना साल हो गया फिर भी जो हंसते गाते चल रहे हैं वो अपने को पदमापदम भाग्यशाली समझ साथ चल रहे हैं और साथ में रहेंगे, यह गैरंटी है। तो यह सूक्ष्म नशा और खुशी होती है। पहले हमारा परिवार छोटा था, अभी हमारा परिवार बढ़ गया फिर भी हम कहते अच्छा हुआ, जितना बढ़े उतनी खुशी है। हम बाबा के बने उसकी खुशी तो है पर जब इतना बड़ा परिवार चारों तरफ के इतनी बड़ी रचना को देख सबको और ही ज्यादा खुशी होती है। अच्छा। ओम् शान्ति।

"बेफिकर बादशाह की स्थिति बनाओ"

ओम् शान्ति। यह सभा बेफिकर बादशाहों की बैठी है, कोई फिकर वाली बैठी है? राजा नहीं कहते हैं बादशाह। बेफिकर बादशाह, बेगमपुर के बादशाह, सतयुग में लक्ष्मी-नारायण महाराजा महारानी वह तो पीछे बनेंगे। अभी हैं बेफिकर बादशाह। चिंता और फिक्र में फर्क है ना। चिंता, नाउम्मींद बना देती है, निराश बना देती है। चिंता से तो मुक्त हो गये। स्वचिंतन ईश्वर चिंतन, स्व में ईश्वर का चिंतन है। अनुभव करो राइट है। ईश्वर चिंतन कहते हैं भगवान चिंतन नहीं कहते हैं। भगवान तो भाग्यविधाता है, पर चिंतन में ईश्वर है। एक तेरा ओट (सहारा), एक आधार यह भक्ति के शब्द हैं। एक वही मेरा आधार है। चिंता ताकी कीजिए जो अनहोनी होए, जो होना है, वह हुआ ही पड़ा है।

आप किसी को कोई बात की चिंता तो नहीं है? चिंता, निश्चयबुद्धि बनने नहीं देती है। निश्चय में विजय है इसलिए अडोल अचल हैं। चिंता काहे की, निश्चय में विजय है। थोड़ा भी संशय है, तो अनेक प्रकार के संकल्प पैदा होते हैं। एक है संशय, दूसरा है डाउट, संशय वाले को न खुद में निश्चय, न बाबा में निश्चय, न एक दो में निश्चय, डाउट होता है। यह कहती तो है लेकिन होगा थोड़ेही...। संशय नहीं है, डाउट है।

मैंने देखा है आप लोगों को सेवा का फिकर बहुत है, चिंता नहीं है, फिक्र है। सेवा से फायदे बहुत हैं ना। एक तरफ बाबा कहता बाबा को खूब याद करो तो विकर्माजीत बनेंगे, फिर कहता है भ्रमरी के मिसल भूं भूं करो। दोनों बातें एक्यूरेट हों। हम अपने को देखें कि विकर्माजीत बनी हूँ? विकर्माजीत की निशानी क्या है? उसको कोई विकल्प नहीं आयेगा। संकल्प भी आयेगा तो वह ऐसा ही काम करायेगा। संकल्प बहुत सूक्ष्म चीज़ है, इसलिए मन शान्त, दिल साफ। चेहरा मुस्करा रहा है। भगवान की मेहरवानी से मन शान्त है, चंचल नहीं है तो दिल बड़ी खुश है। वाह बाबा वाह! जब मन शान्त है तो बुद्धि में संकल्प अति शुद्ध हैं। संकल्प श्रेष्ठ, फिर दृढ़, कमाल है दृढ़ता के संकल्प की। उसमें बुद्धि निश्चय वाली हो गई। विजय हुई पड़ी है, वह अडोल, अचल है। जो कार्य होना है, वह हो ही जायेगा। फिकर क्यों करें!

तो बेफिकर कैसे रहेंगे? चिंता से मुक्त बादशाह हैं। जब मैं बाबा के पास पहले-पहले आई तो बाबा ने कहा बच्ची, तुमसे कोई पूछे कहाँ रहती हो? तो कहना मैं बेगमपुर में रहती हूँ। बेगमपुर के बादशाह, गम का नामनिशान नहीं।

बहनें भट्ठी करने आई हो, यह सब बातें आपके लिए बड़ी बातें नहीं हैं। क्यों? सेवा के निमित्त हो। सेवा का फिकर नहीं है। थोड़ा यह डिफीकल्ट है, यह ऐसे करता है, यह ऐसे करता.. यह अक्ल ही नहीं है। बिल्कुल सहज है। राजयोग सहजयोग है। योग में मेहनत नहीं है, जब यहाँ बैठे हैं, चाहे सेवा में हैं, तो स्व सेवा में सर्व सेवा समाई हुई है। फ्युचर का कोई फिकर नहीं है। यह नहीं कह सकते कि पता नहीं कल क्या होगा। मुझे फिकर नहीं है, परन्तु अटेन्शन है। एक तरफ मुझे बाबा देख रहा है, दूसरे तरफ दुनिया देख रही है। जितने बाबा के बच्चे हैं वह सब मुझे देख रहे हैं, बाबा मेरे पीछे पड़ा है, सारा दिन देखता है, सोने नहीं देता है। कम्पलेन नहीं करती हूँ। फिर दुनिया देख रही है, वायब्रेशन जायेगा। ऐसा जब अटेन्शन है तो बाबा को क्या अच्छा लगता है? मेरा बच्चा बेफिकर बादशाह रहे तो सबको पता चलेगा किसका बच्चा है।

जब यह गीत बना हमने देखा हमने पाया शिव भोला भगवान... तो बाबा ने कहा यह गलत है, बच्चे कहना चाहिए हमने जाना, हमने पाया.. तो एक एक शब्द जो हम मुख से कहते हैं उसमें निश्चय का नशा चढ़ा हुआ हो। और सभी नशों में है नुकसान। कोई भी प्रकार का नशा हो, सेवा का भी नशा चढ़ जाता है, थोड़ा भी नशे में देह अभिमान है तो उसमें नुकसान है। जो उसकी इच्छा है अगर वैसे नहीं है तो अन्दर फीलिंग आती है, यह देह अभिमान है इसलिए बाबा कहते इच्छा मात्रम् अविद्या। यह सब बेफिकर रहने के चिन्ह हैं।

यह बात कैसे ठीक होगी, मुझे थोड़ा फिकर है, इसमें बहुत टाइम लगा है... ऐसा फिकर मैं समझती हूँ कईयों को होगा, मैंने नहीं समझा था कि ऐसी बात मेरे पास भी आयेगी, अब किसको सुनाऊं, कौन निर्णय करेगा.. ऐसा फिकर रहता है ना!

आप भी सेवा पर हो हम भी शुरू से भारत की सेवा पर भी हैं, विश्व सेवा पर भी हैं। अगर फिकर थोड़ा भी करने की नेचर होती तो यहाँ तक नहीं पहुंचती। कई बार शरीर टेस्ट

लेता है, लेकिन फिकर नहीं होती। पर ध्यान है अन्त मते सो गति अच्छी हो। ऊं आ करके आत्मा शरीर से निकले, यह नहीं। शुरू से लेकरके सेवा क्या है? मनमनाभव, मध्याजी भव। अन्दर से अचल अडोल स्थिति हो, हलचल न हो। अचानक कुछ भी हो जाए बाबा कहता तुम एवररेडी रहो। यह भी लिस्ट निकालकर देखें जो भी बाबा के महावाक्य हैं, उसमें एक्यूरेट, एवररेडी, कोई कोई का आपस में हिसाब-किताब भी होता है।

साकार में बाबा को प्रैक्टिकल में देखा था, बाबा के सामने कई बातें आई, कई बच्चों का खेल देखा, परन्तु बाबा का ध्यान अपनी स्थिति पर बहुत था, तभी आज हम सब यहाँ बैठे हैं। अगर बाबा इतना ध्यान नहीं रखता था, दीदी दादी इतना ध्यान नहीं रखती थी तो आप यहाँ नहीं होते। चन्द्रमणी दादी दीदी का जितना अपनी स्थिति पर ध्यान था, उतना हम भी अपने ऊपर ध्यान रखें। अगर दादी को फिकर करने की नेचर होती तो आज शान्तिवन नहीं होता। यह सब कैसे बना? अभी डायमण्ड हाल छोटा पड़ गया है। मैं कहती हूँ, वन्डरफुल बाबा, तो बाबा कहता है बच्ची सब ठीक हो जायेगा। यह दृश्य बड़ा सुन्दर है। जरा भी हिलने की बात नहीं है, थोड़ा भी न हिलें। ऐसी अन्तिम स्थिति अभी-अभी बनानी है। भट्ठी माना संगठन। संगठन में यह बातें स्पष्ट करने में इज़ी लगता है।

प्रश्न:- जब अटेन्शन रखते हैं तो फिकर नहीं आता है लेकिन जैसे आपका नेचरल संस्कार बन गया है, वह कैसे बनें? उत्तर:- सी फादर। बाबा कैसे बैठा है? सदा ही ऐसे देखा है, एक टांग टांग पर चढ़ाकर बैठा है। दूसरा - बाबा लेटा हुआ है - विचार सागर मंथन कर रहा है। मैं एक दिन सुबह बाबा के पास गई तो बाबा लेटा हुआ था, बाबा ने पूछा बच्ची तुम विचार सागर मंथन करती हो! वह दिन आज का दिन, सवेरा होगा कोई न कोई मुरली की अच्छी बात पर विचार चलना शुरू हो जायेगा। मंथन करने में बहुत मजा आता है। फिर मुझे चांस मिले तो सुनाऊं। मुरली सुनाने के पहले भी विचार सागर मंथन सुनाऊं। वह ज्ञान अमृत हो जाता है, मीठा लगता है, फिर रत्नों की तरह वैल्युबुल हो जाता है। ज्ञान अमृत है ना। अमृत मंथन करने से निकलता है। जैसे दही का मंथन करो तो मक्खन भी निकलता है, छांछ भी निकलती है। मक्खन ताकत देता है, छांछ ठण्डा बनाती है। सुबह को थोड़ा मक्खन खा लो। कोई भी वीक होता तो बाबा कहता था सुबह को इसे थोड़ा मक्खन खिला दो। नहीं तो ताजे मक्खन का घी निकालकर थोड़ा पिला दो। तो हमारी दादियों ने कैसे अपनी स्थिति बनाकर रखी है। परदादी का कैसा भी शरीर था, हमेशा मुस्कराती थी। हमेशा कहती थी जनकराज, गुल्जार दादी को कहती थी - गुल गुलाबी। कभी दादियों के चेहरे पर फिकर के चिन्ह नहीं देखे।

फिकर नींद करने नहीं देता है। जब तक कोई साथ न देवे, तो कहेंगे मेरी बात को कोई समझता नहीं है। लेकिन कुछ भी हो हम अपनी स्थिति पर ध्यान रखें, कोई नहीं रखता है कोई हर्जा नहीं है, तुम धीरज रखो। अगर कोई कारण देकर मैं थोड़ा भी फिकर करेंगी तो वह कारण और बढ़ जायेगा फिर मैं कहाँ जायेंगी। कारण भले आये, निवारण है स्थिति। स्थिति मुझे बनानी है, बाबा बनाने में मदद करता है, साथ देता है। मैं एक एक बहन को दिल से कहती हूँ, कभी कैसे शब्द नहीं कहो। आप लोगों ने प्रैक्टिकल दादियों को देखा है।

किसी ने मेरे से पूछा – दादी दादा बनने का क्या पुरुषार्थ है? विश्वरतन दादा, चन्द्रहास दादा, आनंदकिशोर दादा को सबने देखा। उन्होंने कैसे अपनी स्थिति बनाई। चन्द्रमणी दादी ने कैसे अपनी स्थिति बनाई! वन्डरफुल दादी चन्द्रमणी मेरी ब्राह्मणी थी। एक एक दादी को 25-25 बहनें मिली थी, वह उनको सम्भालती थी। चन्द्रमणी दादी ने मम्मा को कहा यह मेरे को दे दो। यह मेरे साथ होगी तो मुझे मदद करेगी। मैंने कभी नहीं सोचा कि मैं भी दादी बनूं, मैं बड़ी बनूं, मुझे बड़ा समझें, वह कभी बड़ा नहीं बन सकता। आजकल यह बीमारी है।

किसी के लिए भी दृष्टि में अगर दोष है, तो वह दोष वाली दृष्टि कोई काम की नहीं, सूक्ष्म है ना। बाबा की दृष्टि में कैसी भी आत्मायें हैं, अजामिल जैसे पापी, गणिका जैसों का भी बाबा ने अपनी दृष्टि से उद्धार किया है। आंखों से देखा है। बाबा ने कभी किसी का दोष नहीं देखा। दोष देखना माना विकर्म का खाता बन जाना, तो विकर्माजीत कैसे बनेंगे! बेफिकर रह करके विकर्माजीत, कर्मातीत बनना है।

दीदी से मेरा अति प्यार था, जब दीदी ने शरीर छोड़ा तो बीमार मैं थी, मरने वाली मैं थी। चली दीदी गई। मैंने देख लिया दीदी पुरुषार्थ करके कर्मातीत बन गई। दीदी बहुत एक्यूरेट योग करती थी। फिर मैंने बाबा को कहा बाबा क्या मैं शरीर में होते कर्मातीत स्थिति का अनुभव नहीं कर सकती? दीदी मुझे नई आयु देकर गई। यह सेवा तुम करेंगी। हमेशा कहती इस पर जाकर भाषण करो, क्लास कराओ। तो सेवा क्या है? स्वयं की स्थिति पर ध्यान। अच्छा।

"निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी स्थिति बनाओ"

मीठी-मीठी गुल्जार दादी का मुखड़ा देखते और सुनते जो अनुभव हुआ वो प्रैक्टिकल दिखाई पड़ता है कि निराकारी, निर्विकारी, निरंहकारी स्थिति क्या होती है! दादी के चेहरे को देखने से ऐसे लगता है ना... फिर अपना मुखड़ा देखो। थोड़ा समय निराकारी स्थिति में स्थित होकर बैठो, इधर उधर नहीं देखो। कोई बात न करो, न सोचो। निराकारी स्थिति माना अशरीरी स्थिति, बीजरूप स्थिति। दृष्टि द्वारा देख रहे हैं पर देखते हुए भी निराकारी स्थिति का अनुभव हो। तो मेरी यह भावना है कि जो शब्द सुनते हैं वो अनुभव करें। हम सिर्फ शब्द नहीं सुनते हैं, शब्द के अर्थ को जानते हैं। अभी जो हम ओम् शान्ति भी कहते हैं ओम् का अर्थ है शान्ति, ओम् का अर्थ है शक्ति, जहाँ शान्ति और शक्ति है वहाँ ऑटोमेटिक हर्षित हैं। निराकारी स्थिति की पॉवर निर्विकारी बना देती है, कोई भी विकार नहीं। काम नहीं, क्रोध नहीं, लोभ नहीं, कोई मोह नहीं, अहंकार की अंश नहीं। अहंकार पिछाड़ी में दिखाया जाता है पर अहंकार जड़ है, जो कभी भी चढ़े तो चाखे प्रेम रस गिरे तो चकनाचूर। तो अपने को चेक करो निराकारी स्थिति कहाँ तक रहती है? जैसे शिवबाबा अशरीरी है, बिन्दु स्वरूप है, सर्वशक्तिवान है, ऐसी स्थिति में निराकारी, स्थूल वा सूक्ष्म शरीर से न्यारे, भान से परे हैं।

निराकारी स्थिति है तो एकाग्रता का बहुत अच्छा अनुभव होता है, बुद्धि स्थिर रहती है। नाम-रूप से न्यारे हैं, ऐसी स्थिति में अन्दर ही अन्दर अभ्यास करते-करते भले कोई टाइम थोड़ा-सा आश्चर्य लगता है। संगमयुग में बाबा निराकारी स्थिति का अनुभव करा करके परमधाम ले जाने के लिए तैयार कर रहा है। निराकारी स्थिति में रहने से, कर्म सम्बन्ध में होते हुए, कर्म भी श्रेष्ठ, प्रेरणा देने लायक हों। देखना बोलना चलना...सबमें श्रेष्ठता हो। देवताओं की मूर्तियों का तो दर्शन करते हैं, पर जब देवताओं का राज्य होगा तो कैसा होगा? समझो, अन्दाजा लगाओ। अभी निर्विकारी बने हैं ना! निराकारी स्थिति से ईश्वरीय सन्तान बने हैं। बुद्धि शुद्ध शान्त हो तो आवाज़ से परे रहने में अच्छा लगता है। नॉलेज है ना इसलिए इज़ी है। निराकार बाबा ने ब्रह्मा बाबा द्वारा निराकारी स्थिति से निष्कामी बना दिया है। निराकारी से निर्विकारी फिर निरहंकारी। तीनों रूपों को इमर्ज करो, बाबा सामने बैठा है और मीठा बाबा कहता है ततत्वम्। भगवान की यही इच्छा है, शिवबाबा ब्रह्मा बाबा के द्वारा निराकारी, निर्विकारी स्थिति हमारी बना रहा है। संगमयुग है, समय का महत्व है। कितना अच्छा समय है!

संगमयुग को सामने देखो तो यह दुनिया नहीं दिखाई पड़ती है। निराकारी दुनिया में जाने की खैंच हो रही है। यहाँ निमित्त मात्र हैं, सदा सी फादर, फॉलो फादर करके सपूत बच्चा बन सबूत देने के लिए। संगमयुग की इस पढ़ाई में बहुत कमाई है। नाम-रूप, देश-काल से परे चले जाओ, न देश याद हो, न समय याद हो, देहभान से परे। कहाँ पर भी रहते मुझे भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा करनी है, तभी स्वर्ग में जायेंगे, ऐसे ही स्वर्ग में नहीं आयेंगे। वैसे कोई मरता है तो कहते हैं स्वर्गवासी हुआ, अब प्रैक्टिकली हम देखते हैं उस बिचारे की अन्त मते सो गति क्या थी। ज्ञान मार्ग में आने से अन्त मते सो गति कैसे होती है, यह देखा है। कोई-न-कोई कर्मभोग में शरीर छोड़ा, तो यह भी अन्दर से अपने लिये भावना हो, कर्मभोग, हिसाब-किताब चुक्तू हुआ पड़ा हो। भले शरीर को कुछ होता है पर कर्मभोग न हो।

आत्मा में जो परमात्मा ने शक्ति भरी है, हिसाब-किताब चुक्तू हो गया, यह भी चेक करना है निराकारी स्थिति में हम सब आत्मायें परमात्मा की सन्तान हैं। एक बार बहुत अच्छे सब योग में साइलेंस में बैठे थे, तो बाबा ने पूछ लिया कि सब कहाँ बैठे थे? कोई जवाब न देवे क्योंकि सब साइलेंस में खोये हुए थे तो फिर बाबा ने पूछा कि कहाँ बैठे थे? तो सभी और साइलेंस की गहराई का अनुभव करने लगे। वैसे अब मैं आपसे भी पूछूँ कहाँ बैठे थे? बाबा ने क्या बोला होगा? एक मिनट के लिए सभी साकार बाबा को सामने रख सोचो, कि बाबा पूछ रहा है कहाँ बैठे थे? तो मेरा जी चाहता है जो प्यारे बाबा ने अनुभव कराया है वैसा अनुभव आप सबको भी होवे। तो देखा बाबा ने, कोई बच्चा जवाब ही नहीं देता है, तो बाबा मुस्कराके कहने लगा बच्चे, ब्रह्माण्ड में बैठे थे। अण्डे मिसल आत्मायें बैठी थी ना। हमने कहा बाबा यह तो कभी सोचा भी नहीं था।

बेगरी पार्ट से लेके सारी उम्र में भले शरीर को कोई-न-कोई तकलीफ होती रही है, कई बार शान्त में रह सोचती थी कि बाबा अब मैं क्या सेवा करूँ! ऐसा कोई प्रभु का प्यारा निकलें जो यज्ञ सेवा करें क्योंकि यज्ञ से प्यार है ना इसलिए जब भी जहाँ भी मैं जायेंगी पहले यज्ञ याद आयेगा, यज्ञ को कभी भूलती नहीं हूँ। बाबा और यज्ञ को बुद्धि में रख सेवा करने से देखा है कि कोई-न-कोई बाबा का बच्चा हीरा निकल ही आता है। तो मीठे बाबा ने ऐसी बहुत सेवायें कराई हैं, लेकिन पहले हमारी स्थिति निर्विकारी हो, कोई भी विकार होता तो यह काम नहीं कर सकती। जरा-सा अहंकार होता तो यह बुरी बला है। अहंकार आया तो अभिमान अच्छी तरह से माथा खराब कर देगा, कभी शान्ति नहीं होगी। बातें करने का ढंग ही नहीं आयेगा, जैसे भूत आ गया है, ऐसे बातें करके वायुमण्डल को डरावना बना देते हैं। तो भूतों को भगाना है या मेरे में भूत की प्रवेशता का... मेरे को तो टच भी करेगा, माथा खराब हो जायेगा क्योंकि आजकल सुनती हूँ कोई कोई में ऐसी प्रवेशता होती है, पता नहीं क्या होता है...? अन्दर लोभ, मोह का भूत होगा तो वह माथा खराब करेगा इसलिए निराकारी, निर्विकारी बनने का पुरुषार्थ चलता रहे। अन्दर देखो यहाँ कहाँ छिपके कोई आशा, कोई तृष्णा... बैठी हुई तो नहीं है, क्योंकि यह दोनों दुश्मन है। तृष्णा तो तमोगुणी है, आशा रजोगुणी है, सतोगुणी - इच्छा मात्रम् अविद्या। गीता में पहला अध्याय है सबको भूल, मुझ एक बाबा को याद करो।

दीदी का मास है, दीदी से हमारी बहुत अच्छी लेन-देन होती थी। हमको दीदी-दादी ने इतना लायक बनाया है, जो इतनी आयु तक दोनों ने जीने दिया है। बाबा कहता है घर में मुझे याद करो माना योग का ऐसा वायुमण्डल हो जो सदा के लिये आवाज़ से परे, नष्टोमोहा स्मृति-स्वरूप की स्थिति नेचुरल रहे। मैं स्मृति में रहूँ, जहाँ भी हूँ जिसके साथ भी हूँ, स्मृति स्वरूप रहूँ। उनको भी स्मृति दिलाने के लिए... हमारा आपस में सम्बन्ध है। स्मृति में ऐसा रहना आ जाये। सब बातें भूल जायें। मेरे से कोई भी बात फिर से रिपीट न हो। जो बात हुई चली गयी, परन्तु हम बात को बिठा करके, भूत बना करके, सोचके विचार करके बात को बड़ा कर देते हैं फिर अपना वातावरण चेंज कर देते हैं। तो निराकारी, निर्विकारी स्थिति से बहुत दूर चले गये। प्लीज़, अभी स्मृति स्वरूप बनो। देह सहित सबसे नष्टोमोहा, सब कार्य करते हुए भी न्यारा और बाबा का प्यारा। ईश्वरीय स्नेह में सम्पन्न बन जायें, ऐसे सब योग करो, कोई हिले भी नहीं। अच्छा - ओम् शान्ति।

22-10-15

"दिमाग को कभी खाली नहीं रखो, सदा बाबा से मीठी-मीठी रूहरिहान करते रहो"

(गुल्जार दादी)

याद में जब बैठते हैं तो बाबा से मीठी मीठी रूहरिहान होती है। यह भी अच्छा पर्सनल टाइम मिलता है बाबा से बातें करने के लिये। औरों से बातें तो करते ही हैं लेकिन बाबा से पर्सनल बातें करें, उसका यह टाइम बाबा ने रखा हुआ है। शाम का यह टाइम वैसे भी योग का है, इसमें जिस रीति से जो भी अनुभव करने चाहो वो कर सकते हो। भले संगठन में बैठे हैं लेकिन हरेक की रूचि अपनी होती है। किसको निराकारी रूप में रहने की रूचि ज्यादा है, किसको आकारी रूप की है, तो जो अनुभव करना चाहें वह कर सकते हैं। इस टाइम को व्यर्थ नहीं गंवाना है, सफल करना है। बाबा ने विचार सागर मंथन करना भी सिखलाया है, बाबा से बातें करने का टाइम भी अच्छा है। पर्सनल अपनी कोई भी समस्या है वह बाबा को बताकरके उसका जवाब लेना चाहिए। ऐसे और भी काफी टाइम हमको मिलता है बीच-बीच में, जो हम कर सकते हैं। मतलब फालतू नहीं सोचो, और बातें नहीं सोचो। जो अपने पुरुषार्थ की बातें हैं उसमें ही रहने का सोचो। जो भी कोई दिल में बात है या पुरुषार्थ के लिये कुछ शक्ति चाहिए वो भी बाबा से ले सकते हैं, बातें भी कर सकते हैं। यह शाम का टाइम हर एक जरूर निकालो, इसमें जिस भी रूप से बाबा से मिलने चाहो, रूहरिहान करने चाहो कर सकते हो। हमारा तो मन का ही पुरुषार्थ है। बाबा ने रूहरिहान करने की भी बहुत सी बातें सुनाई हैं। बाबा से क्या बातें करो फिर अपने आपसे क्या बातें करो, वह सब बाबा ने बतला दिया है। तो अपने आपको बिजी रखो। नहीं तो खाली दिमाग पता नहीं कहाँ कहाँ जाता है। वह हमारे कन्ट्रोल में जरूर हो। अपने आप भी अपने को प्रोग्राम देना, यह भी आदत जरूरी है। जब शुरू में बाबा में

बाबा आया था, उस समय बाबा ऐसी मस्ती में बातें करने में मस्त रहता था, जो देखते ही लगता था बाबा बहुत डीप बाबा से रूहरूहान कर रहा है। तो हमें भी अपने को बिजी रखना चाहिए। भले कोई भाषण ही तैयार करो, किसी भी टॉपिक पर लिखो तो उसमें भी कितना टाइम सफल हो जायेगा। सिर्फ एक ही बात पर नहीं लिखना, वैराइटी में मजा आता है। वैराइटी करने में अच्छा है। मतलब मन को कन्ट्रोल में रखो। ऐसे नहीं टाइम चला गया, सोचा नहीं। कन्ट्रोलिंग पॉवर हमको नई नई इन्वेन्शन निकालने में मदद करती है। मन को काम तो चाहिए ना, खाली मन भी ठीक नहीं है। तो लक्ष्य रखने से फर्क पड़ता है, मन कन्ट्रोल में रहता है। और हमारा योग क्या है? मन को कन्ट्रोल में रखना, जैसे चाहें वैसे चले। बाबा की मुरली इतनी चलती है, तीन चार पेज उस पर ही मनन करें तो भी बहुत है। बिजी रखें मन बुद्धि को, ऐसे नहीं बस बैठे हैं कुछ न कुछ चलेगा, नहीं वो बात दूसरी है लेकिन कन्ट्रोलिंग पॉवर भी हो, जो मैं सोचूँ वही चलें टॉपिक वाइज़। यह अभ्यास होना चाहिए। जितना समय जो सोचें, अपने कन्ट्रोल में मन हो। पहले हम ग्रुप ग्रुप बनाके करते थे, अभी भी ऐसे कर सकते हो। अपने को बिजी रखने का अपने आप ही प्रोग्राम बनाओ। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"सम्पन्न वा कर्मातीत बनने की तपस्या"

जितना बाबा न्यारा प्यारा है, ऐसे ही मधुबन का दृश्य भी न्यारा प्यारा होता है। वैसे तो संगठन होता रहता है। किन्तु इस संगठन को बापदादा ने स्वयं बुलाया है। प्रैक्टिकल प्यार कितना है, मेरे बच्चे दिव्यता नवीनता के निमित्त बनें, उस हेतु रूहरिहान करने वा नया प्लैन बनाने हेतु बुलाया है। सभी के मन में आता है - कुछ होना चाहिए। बाबा ने भी पर्दे के अन्दर रखा है और हमने भी दिल के अन्दर रखा है। बाबा चाहते हैं कि रूहरिहान करके कुछ नया प्लैन बनाएं। बाबा की बात से ऐसा लगता है कि हमारे परिवर्तन से विश्व परिवर्तन रूका हुआ है। बाबा बच्चों से पूछता है आप नई दुनिया में जाने के लिए कब एवररेडी बनेंगे? ताली बजाऊं और पुराना शरीर छोड़ नया सतयुग का चोला धारण करें। बाबा कभी लेटे व बैठे होते थे तो बाबा अपने भविष्य स्वरूप की स्मृति में सदैव रहते थे। बच्ची देख रही हो - मेरा शरीर रूपी कृष्ण का वस्त्र सामने खूटी पर लटका हुआ है, वो पहनना है। साथ रहेंगे, साथ चलेंगे। तो बाबा यही चाहते हैं सम्पन्न बन एवररेडी रहें, बाबा ताली बजाए और नगाड़े बज जाएं।

बाबा ने यह छोटा सा संगठन जमा किया है। साकार की पालना ली है, अव्यक्त की भी ले रहे हैं। नवीनता बाहर के प्रोग्राम की नहीं किन्तु सम्पन्नता के समीप इतना आ जाएं जो सभी देख सेम्पल बन जाएं, बाबा भी देख खुश हो जाए, जैसे बाबा को देख हम बनें। जो परिवर्तन में कुछ रहा हुआ है, वो सम्पन्न हो जाए। तो अभी स्थापना वाले तैयार चाहिए तब बाबा पर्दा खोले। हम सब मिलकर बीती को बीती कर नवीनता करें। आप सभी बाबा के नयनों के सितारे, बाबा के हाथों पले हुए शिव शक्तियां बैठी हो। प्यार के सागर के प्यार में पले फूल हो। जितना प्यार से पाला उतना बेहद सेवा के निमित्त, बल भरकर नष्टोमोहा बनाया। ये संगठन देख मेरे दिल में दो बातें आती हैं:-

1. हम सब प्यारे बाबा के समान सम्पन्न मूर्तियां बनें - यह दृढ़ संकल्प करो। सम्पन्न अर्थात् कर्मातीत बनने का इस भट्ठी में अनुभव करना है। जैसे बाबा साकार में होते भी कर्मातीत था, ऐसे हमारी स्थिति हो।

2. जो भी छोटी मोटी सेवा के कारण मन-वचन चलता, लेन-देन में भी ऊंचा नीचा होता। इसमें जो भी सूक्ष्म ते सूक्ष्म संस्कार का टकराव होता, उसे मिटाकर समाप्त कर सम्पूर्ण मम्मा की तरह बनकर जायें। जैसे मम्मा सम्पन्नता की मूर्ति एग्जैम्पल सामने रही। ऐसे अब सेन्टर की सभी बातों को लगाओ बिन्दी, ऐसी मेरी शुभ भावना है। बिन्दी लगाकर सम्पन्न व कर्मातीत बनने की मौन भट्ठी करो। ऐसी सम्पन्न स्थिति का वायब्रेशन मिले और देहभान से परे हो मौन भट्ठी करो। अब हमें जो देखे हमसे ये अनुभव हो - ये तो मम्मा समान, बाबा समान सम्पन्न बनकर आये हैं। तो सभी बातों को अब बिन्दु लगाओ। इतनी पावर हो। ऐसी कर्मातीत की भट्ठी करके जाओ जो इस भट्ठी के विश्व में वायब्रेशन जायें। राजयोगी सो तपस्वी बनना है, कर्मातीत बन घर जाना है। ऐसा साक्षात्कार मूर्त बनना है, जो कोई भी देखे तो अनुभव करे कि साक्षात मूर्त बनकर आई है। तो ये मौन भट्ठी जरूर प्रत्यक्षता का नया पर्दा खोलेगी।